शिव शिष्य परिवार

परिदृश्य :– शिव शिष्य संगोष्ठी (बेगूसराय)।
स्थान :– देवघर, मुख्यालय।
दिनांक :– 01 अगस्त 2010 (रविवार)

शिव शिष्य परिवार की प्रेरणा एवं बेगूसराय के स्थानीय शिव शिष्य/शिष्याओं के सहयोग से शिव शिष्य संगोष्ठी का आयोजन देवघर (मुख्यालय) के परिसर में दिनांक 01 अगस्त 2010 को किया गया।

संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रुप में पधारने हेतु इस कालखण्ड के प्रथम शिव शिष्य एवं तीन सूत्रों के प्रदाता साहब श्री हरीन्द्रानन्द जी को सादर निमंत्रण श्री देवाशीष प्र0 सिंह, अध्यक्ष, शिव शिष्य परिवार द्वारा भेजा गया, जिस पर उन्होंने कृपापूर्वक अपनी स्वीकृति प्रदान की।

इस संगोष्ठी में बेगूसराय के विभिन्न क्षेत्रों से आये सैकड़ों शिव शिष्य/शिष्याओं को संबोधित करते हुए वरेण्य गुरुभ्राता ने कहा कि शिव को गुरु बनाने से सारे लौकिक पारलौकिक मनोरथ स्वतः पूर्ण होते हैं। शिव तो गुरुओं के गुरु हैं। उनकी शिष्यता ग्रहण करने की स्वतंत्रता प्रत्येक मनुष्य को है। उन्होंने सभी धर्म, सम्प्रदाय, जाति, वर्ण एवं वर्ग के लोगों को शिव का शिष्य होने के लिए आह्वान किया।

श्री अभिनव आनन्द, सचिव, शिव शिष्य परिवार ने बेगूसराय से आये गुरूभाई/बहनों को समझाते हुए कहा कि मानव मन को शिवोन्मुख करने करने हेतु तीन सूत्र का अवलंबन अनिवार्य है।

आगतों का स्वागत बेगूसराय के प्रक्षेत्रीय शिव कार्य संयोजक श्री कमल प्रसाद सिंह एवं अभार व्यक्त प्रक्षेत्रीय शिव चर्चा प्रभारी के द्वारा किया गया।

शिव शिष्य परिवार

परिदृश्य :- शिव शिष्य संगोष्ठी (पूर्णिया एवं कटिहार)।
स्थान :- देवघर, मुख्यालय।
दिनांक :- 08 अगस्त 2010 (रविवार)

शिव शिष्य परिवार की प्रेरणा एवं पूर्णिया/कटिहार के शिव शिष्य/शिष्याओं के सहयोग से देवघर (मुख्यालय) परिसर में दिनांक 08 अगस्त 2010 शिव शिष्य संगोष्ठी आयोजित हुई।

इस आयोजन में मुख्य अतिथि के रुप में पधारने हेतु शिव शिष्य परिवार के सचिव, श्री अभिनव आनन्द द्वारा वरेण्य गुरुभ्राता को सादर अनुरोध किया गया। वरेण्य गुरुभ्राता ने इस अनुरोध को स्वीकार करने की कृपा की।

वरेण्य गुरुभ्राता ने अपनी परिचर्चा के क्रम में बताया कि शिव प्राचीन काल से आदिगुरू पद पर अवस्थित हैं। शास्त्र उनके गुरु स्वरुप की धारणा पर एकमत रखते है यथा, ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः, 'वन्दे विद्यातीर्थ महेश्वरम्', 'तुम त्रिभुवन गुरु वेद बखाना' आदि पंक्तियों के द्वारा शिव के गुरु स्वरूप की अभिव्यंजना की गई है। लेकिन यह सैद्धांतिक तौर पर ही अर्थात् किताबों तक ही सीमित रहा, मानव जीवन मे व्यवहारिक तल पर उतर नही सका। वरेण्य गुरुभ्राता ने कहा कि संपूर्ण मानवी सृष्टि यदि उन्हें अपना शिष्य भाव अर्पित करती है तो उन्हें विश्वमानव के अभ्युदय का दायित्व वहन करना पड़ेगा।

भाव जब प्रगाढ़ होता है तो प्रेम का रूप लेता है और प्रेम में दो भिन्न सत्ताएं एकमेक हो जाती हैं। अर्थात् गुरू और शिष्य के मध्य कोई फासला नहीं रह जाता है।

श्री अभिनव आनन्द, सचिव, शिव शिष्य परिवार ने संगोष्ठी में उपस्थित लोगों को अपने शिष्य जीवन में प्राप्त अनुभूतियों से अवगत कराया।

संगोष्ठी में सैकड़ों लोगों ने चर्चा सुनी। आगतों का स्वागत श्री रौशन कुमार मुन्ना, प्रक्षेत्रीय शिव कार्य संयोजक एवं धन्यवाद ज्ञापन श्री आशीष कुमार आशेष, प्रक्षेत्रीय शिव कार्य संयोजक, पूर्णिया ने किया।

शिव शिष्य परिवार

परिदृश्य :– शिव शिष्य संगोष्ठी (नालंदा)।
स्थान :– देवघर, मुख्यालय।
दिनांक :– 15 अगस्त 2010 (रविवार)

शिव शिष्य परिवार के तत्वावधान में नालंदा के लोगों के सहयोग से शिव शिष्य संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 15 अगस्त 2010 को देवघर (मुख्यालय) परिसर में किया गया।

संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रुप में पधारने हेतु इस कालखण्ड के प्रथम शिव शिष्य एवं तीन सूत्रों के प्रदाता साहब श्री हरीन्द्रानन्द जी को सादर निमंत्रण श्री अभिनव आनन्द, सचिव शिव शिष्य परिवार द्वारा भेजा गया, जिस पर उन्होंने कृपापूर्वक अपनी स्वीकृति प्रदान की।

इस संगोष्ठी में नालंदा जिले के विभिन्न क्षेत्रों से आये सैकड़ों शिव शिष्य/शिष्याओं को संबोधित करते हुए वरेण्य गुरुभ्राता ने कहा कि शिव को गुरु मानने से सारे लौकिक पारलौकिक मनोरथ स्वतः पूर्ण होते हैं। शिव तो गुरुओं के गुरु हैं। उनकी शिष्यता ग्रहण करने की स्वतंत्रता प्रत्येक मनुष्य को है। उन्होंने सभी धर्म, सम्प्रदाय, जाति, वर्ण एवं वर्ग के लोगों को शिव का शिष्य होने के लिए आह्वान किया।

श्री अभिनव अनन्द, सचिव, शिव शिष्य परिवार ने जगत गुरू शिव को अपना गुरू बनाने की बात कही। शिव गुरू व्यक्ति के जीवन में परिवर्तन लाते है।

मंच संचालन श्री रामाशंकर सिंह ने किया। श्री नवीन कुमार, प्रक्षेत्रीय शिव कार्य संयोजक एवं आभार श्रीमती नीलम देवी, क्षेत्रीय शिव कार्य संयोजिका, नालन्दा के द्वारा किया गया।

शिव शिष्य परिवार

परिदृश्य :– झंडोतोलन ।
स्थान :– देवघर, मुख्यालय।
दिनांक :– 15 अगस्त 2010 (रविवार)

शिव शिष्य परिवार के तत्वावधान में मुख्यालय परिसर देवघर में 15 अगस्त को झंडातोलन किया गया। जिसमें शिव शिष्य परिवार के अध्यक्ष द्वारा झंडा फहराया गया साथ में शिव शिष्य परिवार के उपाध्यक्ष, सचिव, कार्यालय के सभी पदाधिकारी/कर्मीगण एवं विभिन्न क्षेत्रों से आये संयोजक एवं प्रभारी रहें।

झंडे के नीचे अपनी बातों से आप्लावित करते हुए श्री देवाशीष सिंह ने कहा की देश की उन्नति चाहते हैं तो अच्छे गुरू का सानिध्य आवश्यक है। वरेण्य गुरूभ्राता का इस

संकल्प से व्यक्ति में परिवर्तन दिख रहा है। जिसमें मानव कल्याण सम्भावित है। जगत के लोग शिव गुरू से जुड़ाव करेंगे तो देश की उन्नति सम्भव है।

उपाध्यक्ष, श्री रामेश्वर मंडल ने कहा कि इस झंडे के नीचे यह संकल्प ले कि जगत के एक–एक व्यक्ति को शिव गुरू से जोड़ेगें और देश की उन्नति का मार्ग प्रशस्त करेंगे।

श्री अभिनव आनन्द, सचिव ने कहा कि झंडा देश के स्वाभिमान का प्रतीक है। सचिव ने पदाधिकारियों एवं कर्मियों का उत्साह बढ़ाते हुए शिव शिष्य परिवार को जनसामान्य में ले जाने की बात कही।

शिव शिष्य परिवार

परिदृश्य :- शिव शिष्य संगोष्ठी (सुन्दरगढ़ एवं झारसूगड़ा)।
स्थान :- देवघर, मुख्यालय।
दिनांक :- 20 अगस्त 2010 (शुक्रवार)

शिव शिष्य परिवार की प्रेरणा एवं सुन्दरगढ़/झारसूगड़ा के शिव शिष्य/शिष्याओं के सहयोग से देवघर मुख्यालय परिसर में संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 20 अगस्त 2010 को किया गया।

शिव शिष्य परिवार के सचिव, **श्री अभिनव आनन्द जी** ने वरेण्य गुरूभ्राता **श्री हरीन्द्रानन्द जी** को सादर आमंत्रित किया व वरेण्य गुरूभ्राता ने अपनी सौम्य उपस्थिति की कृपा की।

संगोष्ठी के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने बतलाया कि 'शिव जन जन के गुरू हैं' इस बात को आम आदमी तक पहुँचाने के उद्देश्य से ही इस संगोष्ठी का आयोजन किया गया है। शिव शिष्य परिवार की मान्यता है कि मनुष्य मात्र का कल्याण शिव को अपना गुरू बना कर ही सम्भव है।

सुन्दरगढ़/झारसुगड़ा जिले में शिव कार्य को तेज करने के लिए आये तमाम गुरूभाई/बहनों को आशीर्वचनों से अप्लावित कर वरेण्य गुरूभ्राता ने शिव शिष्यता पर बल दिया।

श्री अभिनव आनन्द, सचिव, शिव शिष्य परिवार ने संगोष्ठी मे अपनी बात रखते हुए कहा कि शिव विश्व गुरू है परन्तु व्यक्ति के गुरू नहीं हो पाये। आज आवश्यकता आ पड़ी है शिव को एक–एक व्यक्ति के गुरू बनाने का। आदमी शिव हो सकता है बशर्ते गुरू सही हो।

आगतों का स्वागत एवं आभार श्रीमती गुड़ीया देवी, क्षेत्रीय शिव कार्य संयोजिका, झारसुगड़ा ने किया।

शिव शिष्य परिवार

परिदृश्य :– शिव शिष्य संगोष्ठी (मधेपुरा)।
स्थान :– देवघर, मुख्यालय।
दिनांक :– 21 अगस्त 2010 (शनिवार)

शिव शिष्य परिवार की प्रेरणा एवं मधेपुरा के स्थानीय शिव शिष्य/शिष्याओं के सहयोग से शिव शिष्य संगोष्ठी का आयोजन देवघर (मुख्यालय) के परिसर में दिनांक 21 अगस्त 2010 को किया गया।

भागलपुर, 22 अगस्त, 2010
www.jagran.com

मधेपुरा जागरण

शिव शिष्यों की टोली देवघर रवाना

देवघर जाते शिव शिष्य।

जागरण

मधेपुरा, हमारे प्रतिनिधि : मुख्यालय से शिव शिष्यों का एक जत्था शुक्रवार को शिव गुरु संगोष्ठी में भाग लेने देवघर के लिए रवाना हुआ। जत्थेका नेतृत्व विजेन्द्र कुमार यादव कर रहे थे।

शिव यथार्थ में जन-जन के गुरु हो जाएं। इस महानतम संकल्प के धारक करोड़ों जनमानस के अराध्य हरिन्द्रानंद साहब ने पहली बार सन् 1980 में इसी धरती के पावन भूमि से शिव का शिष्य होने के लिए जनमानस को प्रेरित्त किया था। उक्त बातें प्रक्षेत्रीय संयोजक शिव शिष्य हरि कुमार सिंह ने कही। उन्होंने बताया कि जिले के सभी पंचायतों से लगभग 1100 की संख्या में गुरु भाई

- बैद्यनाथ धाम में आयोजित संगोष्ठी में होंगी शामिल

एवं बहन संगोष्ठी में भाग लेने देवघर के लिए निजी वाहनों, ट्रेनों से प्रस्थान किए।

21 अगस्त को देवघर में हरिन्द्रानंद साहब आयोजित संगोष्ठी को संबोधित करेंगे। संगोष्ठी में जाने वाले शिव शिष्यों में किशोर कुमार झा, गणेश कुमार झा, शशि सिन्हा, श्यामल जायसवाल, रमण कुमार सिंह, चन्द्रकिशोर गुप्ता, पवन कुमार रंजन सहित अन्य भाई, बहन शामिल थी।

संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रुप में पधारने हेतु इस कालखण्ड के प्रथम शिव शिष्य एवं तीन सूत्रों के प्रदाता साहब श्री हरीन्द्रानन्द जी को सादर निमंत्रण श्री अभिनव

आनन्द, सचिव, शिव शिष्य परिवार द्वारा भेजा गया, जिस पर उन्होंने कृपापूर्वक अपनी स्वीकृति प्रदान की।

शिव शिष्य संगोष्ठी में उपस्थित मधेपुरा जिलों से आये सैकड़ो की संख्या में अध्यात्म प्रेमीजनों एवं शिव शिष्यों/शिष्याओं को संबोधित करते हुए वरेण्य गुरुभ्राता ने कहा कि शिव को अब अपना गुरु बनाना होगा क्योंकि गुरु सम्यक ज्ञान प्रदान करने वाला होता है। वे जीवन जीने की कला सिखलाते हैं। उन्होंने शिव गुरु से शिष्य के रुप में जुड़ने हेतु तीन सूत्रों– ‘‘दया माँगना, गुरु चर्चा करना तथा गुरु को नमन करना’’– के विज्ञान की विशद् चर्चा की। उन्होंने सभी धर्म, सम्प्रदाय, जाति, वर्ग एवं वर्ण के लोगों को शिव का शिष्य होने हेतु आह्वान किया।

श्री देवाशीष प्र० सिंह, अध्यक्ष, शिव शिष्य परिवार ने कहा कि शिव शिष्यता एक मात्र विकल्प है शिव शिष्यता शिव की दया से उपलब्ध होती है। शिव शिष्य परिवार के सचिव श्री अभिनव आनन्द ने कहा कि शिव को गुरू मान लेने से कुछ नहीं होता। शिव गुरू कार्य से उनकी दया प्राप्त होती है।

आगतों का स्वागत श्री विजेन्द्र यादव, मधेपुरा एवं धन्यवाद ज्ञापन श्री हरि प्रसाद सिंह प्रक्षेत्रीय शिव कार्य संयोजक, मधेपुरा के द्वारा किया गया।

शिव शिष्य परिवार

परिदृश्य :- शिव शिष्य संगोष्ठी (राँची)।
स्थान :- देवघर, मुख्यालय।
दिनांक :- 22 अगस्त 2010 (रविवार)

शिव शिष्य परिवार की प्रेरणा एवं राँची के स्थानीय शिव शिष्य/शिष्याओं के सहयोग से शिव शिष्य संगोष्ठी का आयोजन देवघर (मुख्यालय) के परिसर में दिनांक 22 अगस्त 2010 को किया गया।

इस आयोजन में मुख्य अतिथि के रुप में पधारने हेतु शिव शिष्य परिवार के उपाध्यक्ष, प्रो0 रामेश्वर मंडल द्वारा वरेण्य गुरुभ्राता को सादर अनुरोध किया गया। वरेण्य गुरुभ्राता ने इस अनुरोध को स्वीकार करने की कृपा की।

इस शिव शिष्य संगोष्ठी को सम्बोधित करते हुए वरेण्य गुरुभ्राता ने कहा कि बिना शिव का शिष्य बने मानव जीवन का कल्याण सम्भव नहीं है। शिव गुरु से आया ज्ञान जीवन जीने की कला सिखलाता है। महादेव जगत गुरु हैं। अतः किसी भी धर्म, सम्प्रदाय एवं जाति के लोग शिव को गुरु मान कर इस जीवन को सार्थक बना सकते हैं।

सचिव, शिव शिष्य परिवार श्री अभिनव आनन्द ने कहा कि महादेव के रूप मे शिव की पूजा घर – घर में होती आ रही है किन्तु उनके जगत गुरु स्वरूप से लोगों का जुड़ाव नहीं हुआ है। अश्रद्धा और अविश्वास के दायरे में भी शिव को गुरु मान कर ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

मंच संचालन रामाशंकर सिंह एवं आगतों का स्वागत श्री शिव कुमार विश्वकर्मा, प्रक्षेत्रीय शिव कार्य संयोजक एवं धन्यवाद ज्ञापन स्थानीय गुरुभाई/बहनों द्वारा किया गया।

शिव शिष्य परिवार

परिदृश्य :– शिव शिष्य संगोष्ठी (वीरगंज)।
स्थान :– देवघर, मुख्यालय।
दिनांक :– 28 अगस्त 2010 (शनिवार)

शिव शिष्य परिवार की प्रेरणा एवं वीरगंज के स्थानीय शिव शिष्य/शिष्याओं के सहयोग से शिव शिष्य संगोष्ठी का आयोजन देवघर (मुख्यालय) के परिसर में दिनांक 28 अगस्त 2010 को किया गया।

इस आध्यात्मिक आयोजन में मुख्य अतिथि के रुप में इस कालखण्ड के प्रथम शिव शिष्य वरेण्य गुरुभ्राता साहब श्री हरीन्द्रानन्द जी ने प्रो0 रामेश्वर मडंल, उपाध्यक्ष, शिव शिष्य परिवार द्वारा किये गये सादर आमंत्रण को कृपा पूर्वक स्वीकृति प्रदान की।

इस संगोष्ठी का मूल उद्देश्य लोगों को शिव गुरु से शिष्य के रुप में जुड़ाव हेतु प्रेरित करना है। उन्होंने कहा कि शिव को अपना गुरु मानने के क्रम में प्राप्त अनुभूतियों के आधार पर उनके द्वारा तीन सूत्र निरुपित किये गये हैं। उन्ही सूत्रों के आधार पर शिव का शिष्य बना जा सकता है। महेश्वर शिव के गुरु स्वरुप के संबंध में सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक पक्ष पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए अन्त में सभी धर्म, सम्प्रदाय, जाति, लिंग, वर्ण एवं वर्ग के लोगों को महेश्वर शिव को अपना शिष्य भाव अर्पित करने की दिशा में अग्रसर होने की अपील की।

श्री अभिनव आनन्द, सचिव शिव शिष्य परिवार देवघर ने कहा कि मानव जीवन में गुरू की आवश्यकता नहीं बल्कि अनिवार्यता है। गुरू मनुष्य के जीवन का आधार होता है। इसलिए मानव जीवन में गुरू की अनिवार्यता है।

आगतों का स्वागत एवं आभार स्थानीय गुरूभाई/बहनों द्वारा किया गया है। मंच का संचालन श्री रामाशंकर सिंह, देवघर ने किया।

शिव शिष्य परिवार

परिदृश्य :- शिव शिष्य संगोष्ठी (जौनपुर एवं वाराणसी)।
स्थान :- देवघर, मुख्यालय।
दिनांक :- 29 अगस्त 2010 (रविवार)

शिव शिष्य परिवार की प्रेरणा एवं जौनपुर/वाराणसी के लोगों के सहयोग से देवघर (मुख्यालय) के परिसर में दिनांक 29 अगस्त 2010 शिव शिष्य संगोष्ठी आयोजित हुई।

इस आयोजन में मुख्य अतिथि के रुप में पधारने हेतु शिव शिष्य परिवार द्वारा वरेण्य गुरुभ्राता को सादर अनुरोध किया गया। वरेण्य गुरुभ्राता ने इस अनुरोध को स्वीकार करने की कृपा की ।

शिव शिष्य संगोष्ठी को सम्बोधित करते हुए वरेण्य गुरुभ्राता ने कहा कि शिव जगत गुरु हैं। आदिकाल से वे आदिगुरु एवं गुरु पद पर आसीन हैं। उनके विभिन्न स्वरुपों से जनमानस परिचित है किन्तु उनके ज्ञानदाता स्वरुप की जनमानस में व्याप्ति नहीं है। मानव मात्र के लौकिक – पारलौकिक कल्याण हेतु प्रत्येक व्यक्ति को शिव की शिष्यता ग्रहण करना आज के परिवेश में एक मात्र विकल्प है।

श्री अभिनव आनन्द सचिव, शिव शिष्य परिवार ने शिव शिष्यता एवं शिव गुरु से सम्बंधित विभिन्न विन्दुओं पर अपने विचार रखे। विचारोपरांत तीन सूत्रों का अवलंबन अनिवार्य बताया। आगतों का स्वागत श्री मंगल सिंह, प्रक्षेत्रीय शिव कार्य संयोजक एवं अभार श्री बब्लू क्षेत्रीय शिव कार्य संयोजक वाराणसी ने किया।